कला उत्सव

Kala Utsav 2015

दिशानिर्देश :: Guidelines

सत्यमेव जयते

Government of India

Ministry of Human Resource Development

दिशानिर्देश :: Guidelines

Kala Utsav 2015

अगस्त 2015
श्रावण 1937
PD 1T RA & BS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2015

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा ऐना प्रिन्टओ ग्राफ़िक्स प्रा. लि. 347-के, उद्योग केंद्र एक्सटेंशन-II, सैक्टर-इकोटेक-III, ग्रेटर नोएडा 201 306 द्वारा मुद्रित।

विषय-सूची

1.	**परिचय**	**1-4**
	1.1 कला उत्सव – एक विरासत	
2.	**कला उत्सव के लिए दिशानिर्देश**	**5-12**
	2.1 विषय	
	2.2 कला के क्षेत्र	
	2.3 राष्ट्रीय स्तर पर कला उत्सव के लिए पुरस्कार राशि	
	2.4 पात्रता	
	2.5 कला उत्सव के स्तर	
	2.6 टीम	
	2.7 ऑन-लाइन कला परियोजना (ई-प्रोजेक्ट)	
	2.8 राष्ट्रीय स्तर पर कला उत्सव का आयोजन	
	2.9 निर्णायक मंडल	
3.	**कलात्मक प्रतिभा की पहचान के लिए मापदंड**	**13-15**
	3.1 नाट्यकला	
	3.2 नृत्य	
	3.3 संगीत	
	3.4 दृश्य कलाएँ	
4.	**राज्य/केंद्रशासित प्रदेश के सचिव (शिक्षा) की भूमिका**	**16**
	परिशिष्ट – I	**17-19**
	प्रविष्टियों के लिए प्रारूप	
	परिशिष्ट – II	**20**
	घोषणा-पत्र	

Content

1.	**Introduction**	**21–24**
	1.1 Kala Utsav — the Legacy	
2.	**General Guidelines for Kala Utsav**	**25–32**
	2.1 Theme	
	2.2 Areas of Art	
	2.3 Awards at the National level Kala Utsav	
	2.4 Eligibility	
	2.5 Levels of Kala Utsav	
	2.6 Teams	
	2.7 Online Art Project (e-project)	
	2.8 Organisation of Kala Utsav at the National Level	
	2.9 Jury	
3.	**Criteria for Identifying Artistic Talent**	**33–35**
	3.1 Theatre	
	3.2 Dance	
	3.3 Music	
	3.4 Visual Arts	
4.	**Role of the State/UT Secretary (Education)**	**36**
ANNEXURE – I		**37–39**
Proforma for submitting Kala Utsav Entries		
ANNEXURE – II		**40**
Declaration by the Nodal Officer		

1. परिचय

कला उत्सव मानव संसाधन विकास मंत्रालय की एक ऐसी पहल है, जिसका उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कलात्मक प्रतिभा को पहचानना, उसे पोषित करना, प्रस्तुत करना और शिक्षा में कला को बढ़ावा देना है। कला शिक्षा (संगीत, नाटक, नृत्य, दृश्यकला और शिल्प) के संदर्भ में की जा रही यह पहल राष्ट्रीय फ़ोकस समूह (*National Focus Group Position Paper No. 1.7*) और शिक्षा की केंद्रीय सलाहकार समिति (CABE) की उप-समिति की अनुशंसाओं पर आधारित है। राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (RMSA) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सौंदर्यबोध और कलात्मक अनुभवों की आवश्यकता को समझा और यह भी कि इसके द्वारा विद्यार्थियों को भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और विविधता का ज्ञान हो सकेगा।

भारत में कला और कलात्मकता की प्राचीन परंपरा रही है, पर विद्यालय स्तर पर अभी भी कलात्मक प्रतिभा को पहचानने की प्रक्रिया विकसित करने की आवश्यकता है। हमारे यहाँ कला के माध्यम से सीखने-सिखाने की वर्षों पुरानी परंपरा रही है, जिनमे से एक है वर्णन-परंपरा। ऐसी परंपराएँ व्यक्तिगत अभिव्यक्ति से सामुदायिक अभिव्यक्ति के विस्तार को दर्शाती हैं। इसका प्रभाव समाज के विकास पर पड़ता है।

कला शिक्षा को एक ऐसे माध्यम के रूप में माना जा सकता है जो विद्यार्थियों में सौंदर्यबोध का विकास करे, साथ ही उनमें कला के विभिन्न रूपों — रंग, ध्वनि और गति, के

प्रति संवेदनशीलता उत्पन्न करें। कला का शिक्षा में समन्वय, रचनात्मकता, समस्या समाधान, कल्पना-शक्ति के विकास और बेहतर अभिव्यक्ति को बढ़ावा देता है। कला तेज़ी से बिखरते और हिंसक होते समाज को वैकल्पिक नज़रिए से देखने में मदद करती है, जो विद्यार्थियों के संपूर्ण विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

शिक्षा में कला का समावेश सीखने-सिखाने के लिए कई तरह से लाभकारी है, जैसे– संकोच दूर करने, कल्पना के विस्तार, अन्वेषण और रचनात्मकता को बढ़ावा देने, नैतिक मूल्यों को पोषित करने और व्यक्ति के विकास में। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि स्कूलों में कला शिक्षा की उपेक्षा हुई है; और हमारी युवापीढ़ी कई ऐसे गुणों से वंचित रह गई जो उनके जिम्मेदार नागरिक बनने में सहायक हो सकते थे। साथ ही, स्कूलों में कुछ विषयों को आवश्यकता से अधिक महत्व देने और अपनी सांस्कृतिक जड़ों से कटने के कारण, हमारे सांस्कृतिक मूल्यों में भी गिरावट आई है, और कलाएँ पिछड़ी हैं। कला उत्सव, इस दरार को भरने की एक पहल है जो विद्यालय और समाज के बीच एक सुखद रिश्ता कायम कर

सकती है। यह मंच, माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कलात्मक प्रतिभा को प्रस्तुत करने और उसे आगे लाने में प्रोत्साहन देगा।

कला उत्सव, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (भिन्न क्षमता और विभिन्न आर्थिक-सामाजिक पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चे) को मुख्यधारा से जोड़ने और उनकी योग्यताओं को एक नयी पहचान देने की दिशा में एक समग्र मंच समझा जा रहा है। यह उनकी प्रतिभा को पोषित करने एवं दिखाने हेतु, उचित अवसर एवं अनुकूल वातावरण प्रदान करेगा, और सीखने एवं सिखाने की प्रिक्रया को और अधिक मूर्त, रचनात्मक एवं आन्नददायी बनाएगा। प्रत्येक स्तर (जिला/राज्य/राष्ट्रीय) पर कला उत्सव एक कला-त्योहार जैसा होगा जिसमें कलाओं को उनसे संबधित ऑन-लाईन परियोजनाओं के साथ प्रस्तुत किया जाएगा।

कला उत्सव, स्कूलों में कलाओं के उत्सव की पहल है जो निरंतर चलती रहेगी। ऐसी उम्मीद है कि, कला उत्सव का डिज़ाइन विद्यार्थियों को जीवंत पारंपरिक कला को खोजने, समझने और प्रस्तुत करने में सहयोग करेगा। यह उत्सव न केवल विद्यार्थियों में, बल्कि उनसे जुड़े अन्य सभी में भी भारत की सांस्कृतिक विरासत और उसकी जीवंत विविधता की जागरूकता फैलाएगा। भविष्य में यह शिल्पकारों, कलाकारों और संस्थाओं को विद्यालय के साथ जोड़ने में मदद करेगा।

1.1 कला उत्सव — एक विरासत

कला उत्सव, इसमें भाग लेने वाले विद्यार्थियों के जीवन-कौशल को बढ़ाएगा और उन्हें संस्कृति के दूत के रूप में तैयार करेगा। बच्चे ही हमारा भविष्य हैं, इसलिए विद्यालय हमारे आने वाले कल की प्रयोगशालाएँ हैं। कला उत्सव विद्यालयों के माध्यम से हमें हमारी मूर्त और अमूर्त सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को पहचानने और समझने में सहयोगी होगा।

कला उत्सव केवल एक बारी में समाप्त हो जाने वाली गतिविधि नहीं है, बल्कि यह तो शुरूआत है कलात्मक अनुभव को पहचानने, खोजने, अभ्यास करने और प्रदर्शन की संपूर्ण प्रक्रिया की। एक बार इस प्रक्रिया का हिस्सा बनने के बाद, विद्यार्थी अपनी जीवंत कला शैली को प्रस्तुत करने के साथ-साथ उस पर ऑन-लाईन परियोजनाओं के माध्यम से उसका सांस्कृतिक अनुभव भी करेंगे।

ऑन-लाईन परियोजना में चयनित विषय पर खोजबीन और उसके विभिन्न पहलुओं का प्रलेखन शामिल है। कला उत्सव वेबसाईट पर चढ़ा देने के पश्चात, यह परियोजनाऐं भारत के सांस्कृतिक मानचित्र एवं उससे जुड़े आंकड़ों के संग्रह के रूप में उभरेगा। यह आंकडे हमें हमारे कला एवं सांस्कृतिक संसाधनों के संग्रह में सहायक होंगे और यह विरासत ज़ारी रहेगी।

कला उत्सव का ऑन-लाईन परियोजना में भाग लेने का अर्थ है अनेक प्रकार के संसाधनों पर खोजबीन और उनका प्रलेखन। इससे टीम कार्यों एवं आपसी सहयोग को बढ़ावा मिलेगा।

बालक, बालिका, वंचित समूह एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चों द्वारा एक साथ मंच साझा करने से बहुत-सी सामाजिक रूढ़ियाँ टूटेंगी।

इस पहल से विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को अपनी छिपी हुई प्रतिभाओं को दिखाने का बेहतर अवसर मिलेगा और वे दूसरे बच्चों के साथ अपनी इन कलाओं को साझा कर सकेंगे। इस प्रक्रिया से उनकी मौलिक प्रतिभा ज़मीनी स्तर से निकल कर राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचेगी और ये विद्यार्थी दूसरे छात्रों के लिए प्रेरणा का बेजोड़ स्रोत बनेंगे।

2. कला उत्सव के लिए दिशानिर्देश

2.1 विषय

जीवंत पारंपरिक कलाएँ

(आदिवासी, लोक और परंपरागत कलाएँ)

कला उत्सव का विषय है विभिन्न क्षेत्रों के आदिवासी लोक और परंपरागत कलाओं के जीवंत स्वरूप। भारत, दृश्य और प्रदर्शनकारी कलाओं की भूमि है, जिनमें से कुछ कलाएँ धीरे-धीरे मुख्यधारा से पिछड़ गई हैं। यद्यपि इनमें से बहुत सी कलाएँ अभी जीवंत परंपरा की श्रेणी में है, परंतु यदि इन्हें गंभीरता से नहीं लिया गया तो समय के साथ-साथ ये लुप्त हो जाएँगी।

कला उत्सव के लिए राज्य अपने-अपने क्षेत्र की जनजातीय, लोक और परंपरागत कलाओं पर अपनी प्रविष्टियाँ भेज सकते हैं।

जीवंत परंपरागत कलाओं के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं।

रंगमंच

(i) *रामलीला* – यह उत्तर प्रदेश का प्रसिद्ध लोकनाट्य है जिसे दशहरा के समय उत्तरी एवं मध्य भारत में प्रस्तुत किया जाता है। रामनगर की रामलीला विश्व प्रसिद्ध है।

(ii) *जात्रा* – यह पश्चिम बंगाल का एक लोकप्रिय नाटक शैली है जिसका उदय चैतन्य महाप्रभु के 'जात्रा आंदोलन' के दौरान हुआ। *जात्रा*, प्राय: सितंबर से प्रारंभ होकर मानसून शुरू होने के पहले तक चलता है। विभिन्न धार्मिक उत्सवों के समय *जात्रा* की प्रस्तुति गाँव- गाँव में घूम-घूम कर होती है।

(iii) हरियाणा के *स्वांग* को भी उदाहरणस्वरूप देखा जा सकता है।

संगीत

(i) *केरल का पुलुवन पट्टु* – केरल की एक जाति *पुलुवर* के पुरुष सदस्यों को *पुलुवन* कहा जाता है और स्त्री को *पुलवति*। केरल का *पुलुवर* समुदाय सर्प देवी मुलुथरा की पूजा से जुड़ा हुआ है। इस पूजा में *पुलुवन वीणा* (एकतंत्री) *पुलुवन कुटम* (मिट्टी के बर्तन से बना यंत्र जिस पर तार जुड़ा होता है) और *थालम* (मंजीरा) वाद्ययंत्र बजाया जाता है, जिसे *पुलुवर* स्वयं बनाते हैं।

(ii) *राजस्थान के मांगनियार जनजाति का पारंपरिक संगीत* – मांगनियार, मुस्लिम समुदाय से होते हैं। ये प्राय: राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्र बाड़मेर और जैसलमेर जिले में निवास करते हैं जो पाकिस्तान की सरहद से सटा हुआ है। ये पाकिस्तान के सिंध प्रांत के *थारपारकर* और *सांगर* जिलों में भी पाए जाते हैं। मांगनियार गायक शादी के गीतों का गायन करते हैं। इनके गीत स्त्रियों एवं राज्य में पुरुष प्रधान सत्ता से संबंधित होते हैं। इनकी कुछ विशेष रचनाएँ भी होती हैं जिन्हें वे ईश्वर की स्तुति एवं अपने संरक्षकों और उनके परिवारों की प्रशंसा में गाते हैं।

नृत्य

(i) *चेरो नृत्य* – मिजोरम का प्रसिद्ध नृत्य जिस में बांस के लट्ठों को ज़मीन पर रखा जाता है। इसमें स्त्रियों के लिए जिस वस्त्र-विन्यास का उपयोग किया जाता है वह है – *थीहना, वकीरिया, कावरची* और *पुआंची*। इस नृत्य में पेड़ों के झूमने और पक्षियों के उड़ने के भावों को प्रस्तुत किया जाता है।

(ii) *रऊफ़ नृत्य* – यह कश्मीर का एक लोकप्रिय पारंपरिक नृत्य है। यह खूबसूरत नृत्य सभी तरह के उत्सवों में किया जाता है। खासतौर पर ईद और रमज़ान के दिनों में इसे किया जाता है। इस नृत्य को वसंत के स्वागत के अवसर पर भी किया जाता है। यह नृत्य विशेष रूप से मधुमक्खियों की क्रियाओं पर आधारित है और उनके आपसी प्रेम को चित्रित करता है।

नोट – इन उदाहरणों के आधार पर विद्यालय किसी भी जीवंत पारंपरिक कला को कला उत्सव के लिए चुन सकते हैं।

2.2 कला के क्षेत्र

1. संगीत
2. नृत्य
3. नाट्यकला
4. दृश्यकलाएँ (चित्रकला, मूर्तिकला, शिल्प)

प्रत्येक राज्य / केंद्रशासित प्रदेश से किसी भी कला में केवल एक प्रविष्टि स्वीकार होगी। इस प्रकार प्रत्येक राज्य/केंद्रशासित राज्य से कुल चार प्रविष्टियाँ हो सकती हैं।

2.3 राष्ट्रीय स्तर पर कला उत्सव के लिए पुरस्कार राशि

प्रथम पुरस्कार : ₹5,00,000/-

द्वितीय पुरस्कार : ₹3,00,000/-

तृतीय पुरस्कार : ₹2,00,000/-

हर स्तर की पुरस्कार राशि को चार हिस्सों में बाँटा जाएगा जैसे – नृत्य, नाट्यकला, संगीत और दृश्य कलाएँ।

नोट – कला उत्सव पुरस्कार नगद होगा, जो किसी व्यक्ति विशेष को न दे कर पुरस्कृत समूह के विद्यालयों को दिया जाएगा।

2.4 पात्रता

सरकारी या सरकारी सहायता-प्राप्त स्कूलों के 9वीं, 10वीं, 11वीं और 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों की टीम।

2.5 कला उत्सव के स्तर

राज्य/केंद्रशासित प्रदेश राष्ट्रीय स्तर पर भाग लेने हेतु श्रेष्ठ टीम का चयन करें। निम्नलिखित केवल सुझाव हैं –

जिला-स्तर : यह कला उत्सव का पहला स्तर होगा जहाँ सभी विद्यालय अपनी प्रविष्टियाँ भेज सकेंगे। (राज्य यदि उचित समझे तो कला उत्सव का आयोजन ब्लॉक और तहसील स्तर पर भी कर सकते हैं।)

राज्य / केंद्रशासित प्रदेश : जिला-स्तर पर चुनी हुई प्रविष्टियाँ इस स्तर पर भागीदारी कर सकती हैं।

राष्ट्रीय स्तर : यह कला उत्सव का अंतिम और समापन स्तर होगा जहाँ राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों की चुनी हुई प्रविष्टियाँ अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगी।

2.6 टीम

कला उत्सव की सभी प्रविष्टियाँ टीम में होंगी। यहाँ टीम का तात्पर्य है कि अलग-अलग प्रतिभाओं और योग्यताओं के विद्यार्थी सामूहिक रूप से एक-साथ आएँगे, एक-दूसरे की मदद करेंगे, एक-दूसरे की सराहना करेंगे और चुने हुए काम को पूरा करने में एक-दूसरे के पूरक होंगे। टीम का निर्माण 9वीं, 10वीं, 11वीं और 12वीं कक्षा के चुने हुए विद्यार्थियों को मिला कर किया जा सकता है, जिसमें प्रत्येक जेंडर को भागीदारी का समान अवसर हो। कला उत्सव विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सक्रिय भागीदारी को समावेशी रूप में प्रोत्साहित करता है। विद्यालय/अधिकारियों को यह सुनिश्चित करना होगा कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की भागीदारी केवल दिखावे के लिए न हो।

विभिन्न टीमों* में सदस्यों की संख्या** इस तरह है –

दृश्य कला : 4- 6 विद्यार्थी

संगीत : 6-10 विद्यार्थी

नृत्य : 8-10 विद्यार्थी

नाट्यकला : 8-12 विद्यार्थी

** टीम में विद्यार्थियों की संख्या में, संगत करने वाले एवं नेपथ्यकार्य (Backstage work) करने वाले भी शामिल हैं।*

*** हर टीम को एक शिक्षक साथ लाने की अनुमति है। यह शिक्षक ई-प्रोजेक्ट का सहयोगी सदस्य होना चाहिए।*

2.7 ऑन-लाइन कला परियोजना (ई-प्रोजेक्ट)

ऑनलाइन कला परियोजना राज्य स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक कला उत्सव का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस ई-प्रोजेक्ट का उद्देश्य प्रतिभागी बच्चों द्वारा चयनित कला

के बारे में तथ्यों का प्रलेखन/अभिलेखन तैयार करना है। साथ ही इस कला की संपूर्ण प्रक्रिया को जाँचना, तैयारी करना और कला उत्सव में पेश करना है। विद्यार्थी, ऑन-लाईन पिरयोजना के लिए आसानी से उपलब्ध और प्रयोग किए जा सकने वाले उपकरणों का प्रयोग कर सकते हैं, जैसे – मोबाइल फोन जिसका प्रयोग वह पहले से ही व्हॉट्सअप, फेसबुक, ट्विटर, इन्सटाग्राम, हैंगआउट्स, आदि पर कर रहे हैं। ऑन-लाइन परियोजना के अंतर्गत चयनित कला का अभिलेखन / प्रलेखन करते समय उसके निम्नलिखित पहलुओं को ध्यान में रख सकते हैं,जैसे –

(i) इसका इतिहास

- उद्भव
- संबद्ध समूह
- विशेष अवसर
- वेशभूषा
- आस-पास के पर्यावरण से उसका संबंध, आदि।

(ii) तथ्यों का प्रलेखन करना

(अध्ययन हेतु समुदाय से मिलते समय अथवा अन्य स्रोतों का अध्ययन करते समय)

- फोटो लेना
- समुदाय द्वारा कला प्रदर्शन के समय उसका ऑडियो और वीडियो लेना
- इंटरनेट, अखबार, पत्रिका, अभिलेखागार, पुस्तकालय आदि से सामग्री लेना
- कलाकारों/ शिल्पकारों एवं संबंधित समूहों से साक्षात्कार करना, आदि।

(iii) जीवंत पारंपरिक कला उत्सव के लिए चयनित कला अभयास का प्रलेखन

- सेल्फ़ी लेना
- फोटो लेना
- प्रदर्शन का अभ्यास करते समय ऑडियो/विडियो
- अपना साक्षात्कार एवं प्रक्रिया में शामिल शिक्षकों/सहायकों के साक्षात्कार
- चयनित जीवंत परंपराओं को भविष्य में प्रोत्साहन देने के लिए अपनी टीम का दृष्टिकोण इत्यादि।

(iv) लेखन – 500 शब्दों में टीम द्वारा चुनी गई जीवंत परंपरा का समग्र विवरण।

कला उत्सव में प्रविष्टियाँ जमा करने के लिए प्रारूप परिशिष्ट-I में दिया गया है।

कला उत्सव के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा अलग वेबसाईट बनाई गई है (http://www.ncert.nic.in/kalautsav/) जिस पर राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों के सर्वश्रेष्ठ ऑन-लाईन परियोजना अगले वर्ष तक, '**जीवंत कला परंपराएँ कला उत्सव-2015**' के अंतर्गत देखे जा सकेंगे। जब कला उत्सव 2016 के ऑन-लाईन परियोजना उपलब्ध होंगे तब 2015 के ऑन-लाईन परियोजना, वेबसाइट के आरकाईव में दर्शकों के संदर्भ के लिए डाल दिए जाएँगे।

ऑन-लाइन परियोजना को अपलोड करना

राज्य और केंद्रशासित प्रदेश राष्ट्रीय स्तर के कला उत्सव की तारीख को ध्यान में रखते हुए 15 अक्तूबर से 31 अक्तूबर, 2015 तक, दिए गए फ़ॉरमेट में प्रविष्टियों को यू-ट्यूब (YouTube) पर चढ़ा सकते हैं।

ऑन-लाईन परियोजना को अपलोड करने से पहले, प्रत्येक राज्य एवं केंद्रशासित प्रदेश के नोडल अधिकारी व्यक्तिगत रूप से प्रविष्टियों को जाँचेंगे। राज्य नोडल अधिकारी द्वारा प्रमाणीकरण का प्रारूप संलग्न है (परिशिष्ट-II)।

2.8 राष्ट्रीय स्तर पर कला उत्सव का आयोजन

राष्ट्रीय स्तर पर कला उत्सव का आयोजन 8 से 12 दिसंबर, 2015 तक नयी दिल्ली में किया जाएगा, जो इस प्रकार होगा –

1. राष्ट्रीय स्तर पर केवल राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों द्वारा चुनी हुई प्रविष्टियाँ ही अपना प्रदर्शन करेंगी। यह कला उत्सव का समापन भी होगा। यह कार्यक्रम नेशनल बाल भवन, नयी दिल्ली में 8 दिसंबर से 10 दिसंबर 2015 तक आयोजित होगा।

प्रस्तुति के पूर्व, टीम का एक सदस्य अपनी टीम का परिचय देगा। प्रत्येक टीम को अपनी प्रस्तुति के बारे में बताने के लिए दो मिनट का समय दिया जाएगा, जोकि ऑन-लाईन परियोजना पर आधारित होगा।

2. कला उत्सव का पुरस्कार वितरण समारोह 11 दिसंबर 2015 को सिरी फोर्ट ऑडिटोरियम, नयी दिल्ली में आयोजित किया जाएगा। संगीत, नृत्य, नाटक और दृश्यकला में राष्ट्रीय स्तर की सर्वश्रेष्ठ टीम (प्रथम, द्वितीय, तृतीय) को मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत किया जाएगा।

नोट: राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों से आने वाली टीमों के लिए आवासीय सुविधा एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली उपलब्ध कराएगी।

3. जीवंत पारंपरिक कलाओं का प्रदर्शन जन-समुदाय के बीच सेंट्रल पार्क, कनॉट प्लेस, नयी दिल्ली में 12 दिसंबर 2015 को किया जाएगा, जहाँ विभिन्न क्षेत्रों से आई टीमें अपनी कलात्मकता एवं सांस्कृतिक धरोहर को आम जनता के सामने प्रस्तुत करेगी।

कृपया, नयी जानकारी के लिए कला उत्सव का वेब पेज (http://www.ncert.nic.in/kalautsav/) देखते रहें।

2.9 निर्णायक मंडल

- कला के हर क्षेत्र के लिए अलग-अलग निर्णायक मंडल होगा जिसमें तीन सदस्य होंगे।
- निर्णायक मंडल के सदस्यों में संबंधित कला के शिक्षकों/कलाकारों/विशेषज्ञों को रखा जाएगा।
- यह भी सलाह दी जाती है कि निर्णायक मंडल (नाटक, नृत्य, संगीत, दृश्य कला) में कम से कम एक ऐसा सदस्य हो जिसे विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) के साथ काम करने का अनुभव हो।
- कार्यक्रम के सभी दिनों में निर्णायक मंडल के सदस्य वही रहेंगे।
- निर्णायक मंडल के सदस्य संबंधित ऑन-लाईन परियोजना की प्रविष्टियों (ई-प्रोजेक्ट) को फाइनल प्रतियोगिता शुरू होने से एक दिन पहले देखेंगे ताकि परियोजना के अंकों को भी कला प्रस्तुति के अंकों में शामिल किया जा सके।

3. कलात्मक प्रतिभा की पहचान के लिए मापदंड

3.1 नाट्यकला

- प्रस्तुति की अवधि 20-30 मिनट होगी (यदि टीम द्वारा किसी ऐसे पारंपरिक नाटक का चुनाव किया गया हो जो सारी रात चलता हो, तो ऐसी स्थिति में टीम किसी ऐसे प्रकरण का चुनाव कर सकती है जो दी गई अवधि में समाप्त हो सके।)
- मंचसज्जा और उसे हटाने के लिए 10 मिनट अतिरिक्त दिए जाएँगे।
- प्रदर्शन किसी भी भाषा में हो सकता है जिसमें क्षेत्रीय भाषाएँ एवं बोलियाँ भी शामिल हैं।
- पोशाक, मंचसज्जा और वस्तुओं की व्यवस्था स्वयं टीम द्वारा की जाएगी।
- स्क्रिप्ट की सॉफ़्ट कॉपी ऑन-लाईन परियोजना के साथ ही जमा की जाएगी।

मूल्यांकन प्रपत्र – नाट्यकला

जीवंत पारंपरिक कलाएँ (आदिवासी, लोक और परंपरागत)

टीम कोड/ क्र. सं.	नाटक का नाम	ऑनलाइन कला परियोजना (ई-प्रोजेक्ट)	संगीत एवं ध्वनि प्रभाव	मंचसज्जा/ डिज़ाइन	वेशभूषा और मेकअप	विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का प्रभावी समावेश	अभिनय	कुल अंक
		30	10	10	10	15	25	100

3.2 नृत्य

- प्रस्तुति की अवधि 5-8 मिनट की होगी।
- तकनीकी साज-सज्जा और उसे हटाने के लिए 10 मिनट अतिरिक्त दिए जाएँगे।
- संगीत लाइव या पहले से रिकॉर्ड किया हो सकता है।
- वेशभूषा और मेकअप साधारण, प्रामाणिक और विषयगत होनी चाहिए।
- सेट, वेशभूषा, संगीत वाद्ययंत्र की व्यवस्था स्वयं टीम द्वारा की जाएगी।

मूल्यांकन प्रपत्र – नृत्य

जीवंत पारंपरिक कलाएँ (आदिवासी, लोक और परंपरागत)

टीम कोड/ क्र. सं.	नृत्य प्रविष्टि का नाम	ऑनलाइन कला परियोजना (ई-प्रोजेक्ट)	संगीत	वेशभूषा और मेकअप	टीम सदस्यों में आपसी सामंजस्य	प्रामाणिकता / कोरियोग्राफ़ी	विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का प्रभावी समावेश	कुल अंक
		30	15	10	15	15	15	100

3.3 संगीत

- प्रस्तुति का समय 5-8 मिनट होगा।
- तकनीकी साजसज्जा और उसे हटाने और प्रदर्शन की व्यवस्था करने के लिए 10 मिनट अतिरिक्त दिए जाएँगे।

- संगीत-गायन क्षेत्रीय बोली सहित किसी भी भाषा में हो सकता है।
- पोशाक, सेटिंग्स और सामग्री, प्रस्तुति से संबंधित होनी चाहिए।
- एकॉस्टिक संगीत वाद्ययंत्र ही बजाये जाने चाहिए।
- संगीत प्रस्तुति का लिखित सार हिंदी या अंग्रेज़ी में ही होने चाहिए और उसे ऑन-लाईन परियोजना के साथ ही जमा करवाएँ।
- वाद्ययंत्र बजाने वाले विद्यार्थी टीम के ही सदस्य होने चाहिए।
- वाद्ययंत्र और वेशभूषा आदि का प्रबंध टीम को स्वयं करना होगा।

मूल्यांकन प्रपत्र – संगीत

जीवंत पारंपरिक कलाएँ (आदिवासी, लोक और परंपरागत)

टीम कोड/ क्र. सं.	संगीत की प्रविष्टि	ऑन-लाइन कला परियोजना (ई-प्रोजेक्ट)	सुर	ताल	संगीत संयोजन	वेशभूषा और मेकअप	टीम के सदस्यों में आपसी सामंजस्य	विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का प्रभावी समावेश	कुल अंक
		30	15	15	10	5	10	15	100

3.4 दृश्य कलाएँ

- टीम की प्रविष्टि जीवंत पारंपरिक दृश्य कला के स्वरूपों में से किसी एक में हो सकती है – द्विआयामी (2D) (ड्रॉइंग, पेंटिंग, आदि) या त्रिआयामी (3D) (मूर्ति कला, टेराकोटा, रिलीफ़ कार्य आदि) अथवा 2D और 3D विधाओं का सम्मिश्रण।
- एक टीम एक साथ 6 कलाकृतियाँ ही प्रस्तुत कर सकती है।
- आर्ट वर्क का लिखित सार हिंदी अथवा अंग्रेज़ी में ई-कला परियोजना के साथ जमा करना अनिवार्य है।
- टीम के लिए विषय पर काम करने के दौरान किये कार्य एवं प्रक्रिया की वीडियो रिकॉर्डिंग को ऑन-लाईन परियोजना के साथ भेजना अनिवार्य है।

- कलाकृति और उनकी प्रस्तुति (फ्रेमिंग आदि) की जवाबदेही टीम की होगी।
- राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन के बाद अपनी कलाकृति को वापस ले जाने की जवाबदेही भी स्वयं टीम की होगी।

मूल्यांकन प्रपत्र – दृश्य कलाएँ

जीवंत पारंपरिक कलाएँ (जनजातीय, लोक और परंपरागत)

टीम कोड/ क्र. सं.	दृश्य कला प्रविष्टि का नाम	ऑन-लाइन कला परियोजना (ई-प्रोजक्ट)	सामग्री का प्रयोग	तकनीकी बारीकियाँ	मौलिकता/ प्रामाणिकता	दृश्यात्मक प्रभाव	टीम वर्क	विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का प्रभावी समावेश	कुल अंक
		30	10	10	15	10	10	15	100

4. राज्य / केंद्रशासित प्रदेश के सचिव (शिक्षा) की भूमिका

प्रत्येक राज्य अथवा केंद्रशासित प्रदेश से आने वाली सभी प्रविष्टियाँ राष्ट्रीय स्तर के लिए भेजे जाने से पहले वहाँ के सचिव (शिक्षा) द्वारा जाँची एवं अनुमोदित की जानी चाहिए।

परिशिष्ट – I

प्रविष्टियों के लिए प्रारूप

भाग क

सामान्य सूचनाएँ

1. राज्य/ केंद्रशासित प्रदेश का नाम : ____

2. स्कूल का नाम और पता : ____
____
____

फ़ोननंबर:____________________ ई-मेल:____________________

स्कूल आई.डी. (UDISE) : ____________________

3. स्कूल का प्रकार : ☐ सरकारी ☐ सरकारी सहायता-प्राप्त

4. कला का नाम :
संगीत / नृत्य / नाटक / दृश्य कला

5. टीम का विस्तृत ब्योरा –

क्र.सं.	विद्यार्थी का नाम	कक्षा	ऑन-लाईन परियोजना में उसकी भूमिका	विशेष आवश्यकता वाला बच्चा (CWSN) है या नहीं
1.				
2.				
3.				
4.				
5.				
6.				
7.				

8.				
9.				
10.				
11.				
12.				

6. ऑन-लाईन परियोजना में शामिल शिक्षकों का विस्तृत ब्योरा :

क्र. सं.	शिक्षक का नाम	पद और विषय (जो वह पढ़ाता/पढ़ाती है)	ऑन-लाईन परियोजना में भूमिका
1.			
2.			
3.			
4.			

भाग ख

ऑन-लाईन कला परियोजना (ई-प्रोजेक्ट) का विस्तृत ब्योरा

7. ई-प्रोजेक्ट का नाम : _____

8. भाषा : ☐ हिंदी
☐ अंग्रेज़ी
☐ क्षेत्रीय भाषा

कृपया स्पष्ट करें : _____

9. व्याख्या/ ऑन-लाईन परियोजना की पृष्ठभूमि (500 शब्दों में) वेबसाइट पर डालने एवं छपने वाले दस्तावेज के लिए यह जानकारी आवश्यक है।

इस स्थान पर कला के प्रकार की मूल जानकारी दी जानी है। इसमें इस कला रूप की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, यह किस क्षेत्र से आया है, यह किसी समुदाय विशेष से संबंधित है अथवा नहीं ? इसे किस तरह आयोजित या प्रस्तुत किया जाता है ? क्या इसे किसी विशेष उत्सव पर प्रस्तुत किया जाता है ? यह जीवंत कला है अथवा लुप्तप्राय कला है ? आदि।

10. ऑन-लाईन परियोजना की प्रक्रिया (500 शब्दों में) वेबसाइट पर डालने एवं छपने वाले दस्तावेज के लिए यह जानकारी आवश्यक है।

ऑन-लाईन परियोजना के विभिन्न चरणों का एक संक्षिप्त विवरण जिसमें विचार / विषय का चयन/ कला के प्रकार आदि शामिल हैं।

परिशिष्ट – II

घोषणा-पत्र

(राज्य/ केंद्रशासित प्रदेश के नोडल अधिकारी द्वारा घोषणा)

यह प्रविष्टि _____ जो राष्ट्रीय स्तर के कला उत्सव में नाटक / नृत्य / संगीत / दृश्य कला की प्रतियोगिता में प्रतिभागिता हेतु अपलोड की जा रही है इसने _____ ____ राज्य/केंद्रशासित प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

मैंने व्यक्तिगत रूप से इस टीम की प्रस्तुति को देखा है और प्रमाणित करती/ करता हूँ कि इन्होंने कला उत्सव के दिशानिर्देशों का पूर्णतः अनुपालन किया है।

दिनांक ____/10/2015

स्थान _____

सील के साथ हस्ताक्षर

सेवा में,

अध्यक्ष
कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110016

1. Introduction

Kala Utsav is an initiative of the Ministry of Human Resource Development (MHRD), to promote arts in education by nurturing and showcasing the artistic talent of school students at the secondary stage in the country. In the context of education of Arts (Music, Theatre, Dance, Visual Arts and Crafts), the initiative is guided by the recommendations of the National Focus Group Position Paper (No. 1.7) on Arts, Music, Dance and Theatre for *National Curriculum Framework 2005 (NCF- 2005),* and by the report of the Central Advisory Board on Education (CABE) Sub-committee on Integration of Culture Education in the School Curriculum. *Rashtriya Madhyamik Shiksha Abhiyan* (RMSA) recognises the importance of aesthetics and artistic experiences for secondary-level students, which play a major role in creating awareness of India's rich cultural heritage and its vibrant diversity.

Though India has a long tradition of art and artistic practices, a uniform process of identifying artistic talents in school education is yet to be developed. We also have a tradition of using arts in the process of learning: the narrative tradition is one such example. These traditions also show us the creative expansion from the individual to the community, which contributes towards the overall development of the society.

Arts education may be perceived as a tool for development of aesthetic sensibility among learners to enable them to respond to the beauty in various forms, colours, sound and movement. Arts integration in education helps to encourage creativity, develop problem-solving ability, and improves the ability to handle mental imagery and better expression.

Arts education helps the learner to view the increasingly violent and divided society through an alternative prism of beauty and aesthetics and hence, is crucial for the holistic development of the learners. Integration of arts in education benefits learning in many ways. It serves to overcome inhibitions and promote exploration, stimulate creativity, broaden imagination, nurture values and play an important role in the development of an individual. Unfortunately, arts education has been neglected in schools, depriving our younger generations of all these traits which otherwise can help them to become contributing citizens. Also, our cultural values are deteriorating due to over-emphasis on certain school subjects and disconnect from our cultural roots, thus,

arts have taken a back seat. Kala Utsav is an initiative to bridge this gap and establish a connect between society and schools. This platform will encourage and showcase the artistic talent of students of secondary level and bring arts to the centre stage.

As an effort to mainstream students with special needs (differently-abled and from diverse socio-economic backgrounds) and celebrating their abilities, Kala Utsav is envisaged as a fully integrated platform. It would provide an opportunity and favourable environment to nurture and showcase their talents and help in making learning more concrete, creative and joyful.

Kala Utsav will be a pioneering celebration of art forms in the school system and shall continue as an ongoing programme. The district/state/national-level Kala Utsav is structured as an art festival which will include performances and display of exhibits along with their online art projects (e-project). The design of Kala Utsav will help students explore, understand and showcase their living traditions in art. Through Kala Utsav, students will get the opportunity to understand and celebrate cultural diversity at school, district, state and national levels. It will not only spread awareness among students, but also create awareness of India's cultural heritage and its vibrant diversity amongst other stakeholders. Further, this will help to promote networking of artists, artisans and institutions with schools.

1.1 Kala Utsav—the Legacy

Kala Utsav will enhance the life-skills of the participants and prepare them as ambassadors of our culture. Children are the seeds of future and therefore, our schools will become the laboratory of tomorrow's

India. Kala Utsav will help in identifying and understanding our diverse tangible and intangible cultural expressions.

This is not a onetime activity but the beginning of a complete process of identifying, exploring, understanding, practising, evolving and showcasing the artistic experience. Once part of the process, the participants will not just perform pieces from their living traditions only, but will rather live that cultural experience while documenting 'online project' as part of their Kala Utsav entry.

The online project (e-project) involves research on the selected topic and documentation of its different aspects. These e-projects, once uploaded on the Kala Utsav website, will emerge as an empirical database on cultural mapping of the country. The database can further help us create a repository of artistic and cultural resources, and the legacy continues.

The participation in the e-projects for Kala Utsav would involve exploration of multiple resources for research and documentation. This in turn would promote team work and collaboration rather than relying on individual means or resources.

Sharing the stage collectively by boys, girls, students from disadvantaged groups and students with special needs will be a precursor in breaking many existing stereotypes.

Students with special needs will find an added opportunity to express their hidden talents through this initiative. This will further provide them an opportunity to share the limelight with their abled counterparts and the hidden talents of these students will surface from grassroots to the national level. Their participation would initiate a multiplier effect and will serve as a source of inspiration for others to follow later.

2. General Guidelines for Kala Utsav

2.1 Theme

Living Traditions of Art

(Tribal, Folk and Traditional Art Forms)

The theme of Kala Utsav is 'Living traditions of tribal, folk and traditional arts of different regions'. India is a land of performing and visual arts, some of which are gradually fading out from the mainstream. Though these art forms are in the category of our living traditions at present, but if not given due attention, these might disappear in due course of time.

States may send their entries for Kala Utsav, focussing on the tribal, folk and traditional art forms of their region.

Some examples of the Living Traditions in Arts are:

In Theatre

(i) *Ramleela* - It is a famous folk theatre form of Uttar Pradesh. It is enacted during Dussehra in most parts of Northern and Central India. The Ramleela of Ramnagar is famous all over the world.

(ii) *Jatra* - It is a popular folk-theatre form of West Bengal.

The origin of Jatra, intrinsically a musical theatre form, is traditionally credited to the rise of Sri Chaitanya's Bhakti movement. The Jatra season begins in the autumn, around September and ends before the monsoon sets in. Performances of Jatras are common place after festivities and religious functions, ceremonies in traditional households, and fairs, throughout the region.

(iii) *Suwang* is another such example of theatre in Haryana.

In Music

(i) *Pulluvan Paattu* from Kerala – A Pulluvan is a male member (female Pulluvatti) of a particular caste called Pulluvar. The Pulluvar of Kerala are closely connected to the serpent worshipping Mulluthara Devi Temple. The musical instruments used by the Pulluvar are *pulluvan veena* (one stringed violin), *pulluvan kutam* (earthernware pot with one string attached to it) and *thaalam* (bell-metal cymbals). These instruments are made by the Pulluvars themselves.

(ii) Traditional Music of the Manganiar tribe of Rajasthan – This is a Muslim community in the desert of Rajasthan, belonging to the districts of Barmer and Jaisalmer, along the border with Pakistan. They are also found in the districts of Tharparkar and Sanghar in the province of Sindh in Pakistan. The Manganiar musicians sing marriage songs, songs on women's issues, male domination etc. in the state. There are special compositions to praise the patrons and their families; also songs in praise of the Almighty.

In Dance

(i) *Cheraw* dance from Mizoram is characterised by the use of bamboo staves which are kept in cross and horizontal forms on the ground. The common costumes worn by the female performers during the *Cheraw* dance include *Thihna, Vakiria, Kawrchei* and *Puanchei*. Expressions of *Cheraw* dance resemble the swaying of trees and the flying birds.

(ii) *Rouf* dance is one of the most popular traditional dances of Kashmir. This beautiful dance form graces all the festive occasions, especially Eid and Ramzan days. This dance is performed as a welcoming dance for the spring season. The dance is clearly inspired by the bee and it is the lovemaking of the bee that is portrayed in the dance.

Note: On the similar lines as these examples, the school can select any of their Living Art Traditions for Kala Utsav.

2.2 Areas of Art

1. Music
2. Dance
3. Theatre
4. Visual Arts (Drawing, Painting, Sculpture, Crafts)

There shall be only one entry for each art form from each State/UT. Thus, each State/UT shall have total of four entries.

2.3 Awards at the National level Kala Utsav

First prize: ₹5,00,000/-

Second prize: ₹3,00,000/-

Third prize: ₹2,00,000/-

The amount for each award will be divided into four art forms equally i.e., theatre, dance, music, and visual art.

Note: Kala Utsav Award is a cash award, to be given to the school/s and not to individuals.

2.4 ELIGIBILITY

Teams of students from Classes 9th, 10th, 11th and 12th of any Government and Government-aided school.

2.5 LEVELS OF KALA UTSAV

States/UTs shall select the best teams for participating at the National Level. The following is suggestive:

District – This is the first level of Kala Utsav, where all schools can send their entries. (If appropriate and convenient, the State may opt to have Kala Utsav at the block or tehsil level.)

State/UT – Selected teams from district level will participate at this level.

National – This is the final and culminating level of Kala Utsav where the best of the State/UT entries will showcase their talent.

2.6 Teams

All entries to Kala Utsav shall be in teams. Here "team" means that students with different talents and abilities come together, assist each other, appreciate each other, and complement each other in completion of the chosen task as a whole. A team can be formed selecting students from Classes 9th, 10th, 11th and 12th, providing equal opportunity of participation to all the genders. Kala Utsav promotes active participation of students with special needs, in inclusive settings. Schools/authorities may ensure that students with special needs have active participation in Kala Utsav and are not used merely as token.

The minimum and maximum number of students* recommended in different teams** are:

Visual Arts: 4- 6 students

Music: 6-10 students

Dance: 8-10 students

Theatre: 8-12 students

** including those students who are accompanists and working backstage.*

*** Every team will be allowed to have only one escort (teacher) who has been facilitating the concerned e-project.*

2.7 Online Art Project (e-project)

Online art project (e-project) is an important part of Kala Utsav entry from States/UTs to the National Level. The e-project is all about documenting/recording facts of the selected art form by the participating students on one hand and recording of the process of their exploring, rehearsing and presenting that art form in Kala Utsav, on the other. The

students can complete their online projects with easy to use equipment, such as cell phone, which they are already using for social media such as: WhatsApp, Facebook, Twitter, Instagram, Hangouts, etc.

Online projects might include recording and documentation of different aspects of the selected art form, such as:

(i) Its history

- origin
- communities involved
- special occasions
- costumes
- its relation with the environment, etc.

(ii) Documenting the facts
(during their field visit to the community or from other sources):

- taking photographs
- audios and videos of the community performing this art form
- taking from the internet, newspaper, magazines, archives, libraries etc.
- interviews with artists/artisans and the community involved

(iii) Documenting the process of practising living traditions for Kala Utsav

- taking selfies
- photographs
- audios/videos of the rehearsals
- self-interviews and interviews of the teachers/facilitators involved in the process
- views of the team on how the particular living tradition can be encouraged further, etc.

(iv) Write-up: the holistic view of the particular living tradition by the team in 500 words.

Proforma for submitting Kala Utsav entries is given as in Annexure – I.

NCERT has developed a separate website for Kala Utsav (http://www.ncert.nic.in./kalautsav/) where best online projects from States/UTs on the *'Living Traditions of arts for Kala Utsav-2015'* shall be available till next year, when we receive new online projects for the Kala Utsav-2016. The online projects of 2015 shall be moved to the archive of the same website for viewer's reference and the legacy continues.

Uploading the Online Project

Keeping the Kala Utsav dates in view, the States/UTs must upload their best entries for National Level Kala Utsav between 15–31 October 2015 on YouTube.

State Nodal Officer should personally see the entries and verify it before uploading them. Declaration form for the authentication is given in Annexure – II.

2.8 ORGANISATION OF KALA UTSAV AT THE NATIONAL LEVEL

National Level Kala Utsav is scheduled to be held from 8 – 12 December 2015 in New Delhi.

Glimpses of Utsav events :

1. National Level Kala Utsav Competition, which is the culmination of this Utsav shall be held at National Bal Bhavan, New Delhi, from 8 – 10 December 2015. The best teams selected by the States/UTs for Kala Utsav only shall get the opportunity to perform here.

Before the performance, one member of the performing team shall introduce her/his team and each team shall get only 2 minutes for introducing their performance, which is based on the online project.

2. Award function of Kala Utsav shall be held at Siri Fort Auditorium, New Delhi, on 11th December 2015. The best performing teams (First, Second and Third) in Music, Dance, Theatre and Visual Arts at the National Level shall be awarded by the Ministry of Human Resource Development, Govt. of India.

Note: The boarding lodging arrangements for the teams (with their escorts) from States/UTs shall be made by the NCERT, New Delhi.

3. Public celebration of our Living Art Traditions from different regions shall be held at Central Park, Connaught Place (New Delhi) on 12th December 2015, where teams from different regions will showcase their artistic talent and cultural heritage with the general public.

Please keep visiting the Kala Utsav web page (http://www.ncert.nic.in/kalautsav/) for announcements and status updates.

2.9 JURY

- For every area of arts, there will be a separate jury consisting of three experts.
- The Jury members will be drawn from educators/practitioners/scholars of the respective art forms.
- In every Jury (Theatre, Dance, Music and Visual Arts), it is advisable to have one expert having experience of working with Children With Special Needs (CWSN).
- Members of the jury will remain same for all the days of the event.
- The Jury will view all online project entries in their respective art forms, one day before the actual final competitions. The evaluation of e-projects by the Jury shall be included in the performance marks.

3. Criteria for Identifying Artistic Talent

3.1 Theatre

- The duration of the performance will be 20–30 minutes (In case of a traditional performance, which runs overnight, the team may select one episode which can be completed in the given time).
- An additional 10 minutes will be given for stage and technical setting and clearing of the stage.
- Performance can be in any language or dialect.
- Costumes, settings, props and properties will be arranged by the teams themselves.
- The soft copy of the script should be submitted with the online project.

Evaluation Sheet – Theatre

Living Traditions of Art (Tribal, Folk and Traditional Art Forms)

Team Code	Name of the Play	Online Art Project (e-project)	Music and Sound Effect	Stage setting/ Design	Costume and Makeup	Effective Inclusion of CWSN	Acting	Total Marks
		30	10	10	10	15	25	100

3.2 DANCE

- The duration of the performance will be 5–8 minutes.
- An additional 10 minutes will be given for technical setting/ removal, arrival and dispersal for the performance.
- Music can be either live or recorded.
- Costumes and make-up should be simple, authentic and thematic.
- Sets, costumes, musical instruments, etc. are to be arranged by the teams

Evaluation Sheet – Dance

Living Traditions of Art (Tribal, Folk and Traditional Art Forms)

Team Code	Name of the Dance Entry	Online Art Project (e-project)	Music	Costumes and Make-up	Co-ordination amongst the Team Members	Authenticity/ Choreography	Effective inclusion of CWSN	Total Marks
		30	15	10	15	15	15	100

3.3 MUSIC

- The duration of the performance will be 5–8 minutes.
- An additional 10 minutes will be given for technical setting/ removal, arrival and dispersal for the performance.
- Music recitals can be in any language or dialect.
- Costumes, settings, props and properties should relate to the presentation.

- Acoustic musical instruments should be played.
- The textual summary and lyrics of the musical presentations have to be either in Hindi or English and need to be submitted with the online project.
- The students who play the instruments will be part of the team.
- Musical instruments, costumes, etc., to be arranged for by the respective teams.

Evaluation Sheet – Music

Living Traditions of Art (Tribal, Folk and Traditional Art Forms)

Team Code	Name of Music Entry	Online Art Project (e-project)	Sur	Taal	Composition	Costumes and Make-up	Co-ordination amongst the Team Members	Effective inclusion of CWSN	Total Marks
		30	15	15	10	5	10	15	100

3.4 Visual Arts

- The team entry on living traditions in arts could be in any of the visual art forms: 2-dimensional (Drawing, Painting, etc.) or 3-dimensional (sculpture, terracotta, relief work etc.) or a combination of 2D and 3D forms.
- The team can have a maximum of 6 pieces of art work together, where every piece of art is part of the team presentation.
- The textual summary of the art work has to be either in Hindi or English and needs to be submitted with the online project.
- It is mandatory for the team to submit the video clips of the process of working on the subject, which would be submitted along with the online project.
- The team is responsible for its art work and its presentation (framing etc).
- The teams are responsible for packaging, bringing and taking back their art work.

Evaluation Sheet – Visual Arts

Living Traditions of Art (Tribal, Folk and Traditional Art Forms)

Team Code	Title of the Art	Online Art Project (e-project)	Handling of the Material	Fineness of the Technique	Originality/ Authenticity	Visual Impact	Team Work	Effective inclusion of CWSN	Total Marks
		30	10	10	15	10	10	15	100

4. Role of the State/UT Secretary (Education)

All the four entries from the State/UT shall be seen and approved by the State/UT Secretary before they are forwarded for the national level.

Annexure – I

PROFORMA FOR SUBMITTING KALA UTSAV ENTRIES

(To be sent by the schools selected by the State/UT to participate at National Level. Please use separate proforma for each selected entry.)

Section A

General Information

1. Name of the State/UT :

   _____

2. Name and Address of the School : _____

   _____

   _____

   _____

   Contact No : _____

   E-mail : _____

   School ID (UDISE) : _____

3. Type of School: ☐ Government ☐ Government-aided

4. Name of the Art Form:

   Music/ Dance/ Theatre/ Visual Arts

5. Details of the Participating Team:

S. No.	Name of the Student	Class	Role in the Entire e-project	Whether from CWSN
1.				
2.				
3.				

4.				
5.				
6.				
7.				
8.				
9.				
10.				
11.				
12.				

6. Detail of the Teachers involved in the e-project:

S. No.	Name of the Teacher	Designation and Subject He/She Teaches	Role in the e-project
1.			
2.			
3.			
4.			

Section B

Detail of the Online Art Project (e-project)

7. Title of the e-project: _____

_____

8. Language:

☐ English

☐ Hindi

☐ Regional Language

Please specify : _____

9. Description/Background of the e-project (in 500 words). This will be required for the website and for the printed document on Kala Utsav – 2015.

This section should provide the basic information of the art form. It should contain the historical background of the art form, the region it is being practised in, whether it belongs to a community or not? How is it practised? Is there any special occasion attached to it? Is it a living tradition or a dying art form?

10. Processes of the e-project (in 500 words). This will be required for the website and for the printed document on Kala Utsav – 2015.

A brief description of the different stages of the e-project including the idea, selection of the theme/content/form of the art, etc.

Annexure – II

DECLARATION

(By the State/UT Nodal Officer – Kala Utsav)

The '_____
_____' entry submitted/uploaded for the National Level 'Kala Utsav', for Theatre/Dance/Music/Visual Art, stands first in _____ _____ State/UT.

I have personally seen the presentation of this team and I certify that it does not violate the Kala Utsav Guidelines.

Dated ____/10/2015
Place: _____

Signature with seal

To

The Head
Department of Education in Arts and Aesthetics
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurbindo Marg, New Delhi 110016

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING